श्री शिवपुराण

※ प्रथम खण्ड ※

शिवपुराण—महात्म्यम्

※ शिवपुराण—महत्व ※

हे हे सूत महाप्राज्ञ सर्वसिद्धान्तवित्प्रभो ।
आख्याहि मे कथासारं पुराणानां विशेषतः ।१।
सदाचारश्च सद्भक्तिर्विवेको वर्द्धते कथम् ।
स्वविकारनिरासश्च सज्जनैः क्रियते कथम् ।२।
जीवाश्च सुरतां प्राप्ताः प्रायो घोरे कलाविह ।
तस्य संशोधने किं हि विद्यते परमायनम् ।३।
यदस्ति वस्तु परमं श्रेयसां श्रेय उत्तमम् ।
पावनं पावनानां च साधनं यद्वदाधुना ।४।
येन तत्साधनेनाशु शुद्धयत्यात्मा विशेषतः ।
शिवप्राप्तिर्भवेत्तात सदा निर्मलचेतसः ।५।

शौनकजी ने कहा—हे सूतजी! हे सर्वसिद्धान्तो के ज्ञाता महा-पंडित! आप विशेषकर पुराणों की कथा का सार मेरे प्रति कहिये ।१। सदाचार, भक्ति के द्वारा विवेक की वृद्धि किस प्रकार होती है और सज्जन अपने विकारों को किस प्रकार शान्त करते हैं सो कहिये ।२। इस घोर कलि-काल में प्राणी असुरत्व को प्राप्त हुये हैं, उनका शोधन किस प्रकार हो सो आप कहने की कृपा करें ।३। जो वस्तु अत्यन्त श्रेष्ठ और कल्याण देने वाली है तथा जो पवित्रों से भी पवित्र है उत्तम साधन रूप है सो आप मुझसे कहें ।४। आत्मा जिस साधन के द्वारा शुद्ध हो जाता है और सदा निर्मल चित्त वाले व्यक्तियों को भगवान् शिव प्राप्त हो जाते हैं ।५।

धन्यस्त्वं मुनिशार्दूल श्रवणप्रीतिलालसः ।
अतो विचार्य सुधिया वच्मि शास्त्रं महोत्तमम् ।६।
सर्वसिद्धांतनिष्पन्नं भक्त्यादिकविवर्द्धनम् ।
शिवतोषकरं दिव्यं शृणु वत्स रसायनम् ।७।
कलिव्यालमहात्रासविध्वंसकरमुत्तमम्
शैवं पुराणं परमं शिवेनोक्तं पुरा मुने।८।
जन्मान्तरे भवेत्पुण्यं महद्यस्य सुधीमतः ।
तस्य प्रीतिर्भवेत्तत्र महाभाग्यवतो मुने ।९।
एतच्छिवपुराणं हि परमं शास्त्रमुत्तमम् ।
शिवरूपं क्षितौ ज्ञेय सेवनीयं च सर्वथा ।१०।
पठनाच्छ्रवणादस्य भक्तिमान्नरसत्तमः ।
सद्यः शिवपदप्राप्तिं लभते सर्वसाधनात् ।११।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन काङ्क्षितं पठनं नाभिः ।
तथास्य श्रवणं प्रेम्णा सर्वकामफलप्रदम् ।१२।

सूतजी ने कहा—हे मुनिवरों ! तुम्हारी प्रीति कथा सुनने में है । इस लिए तुम धन्य हो । इसी कारण मैं बुद्धिपूर्वक विचार करके यह श्रेष्ठ शास्त्र कहता हूँ ।६। यह सर्व सिद्धान्त से सम्पन्न भक्ति आदि की वृद्धि करने वाला तथा शिवजी का सन्तोष करने वाला परम दिव्य रसायन स्वरूप है ।७। कालरूपी महासर्प का विध्वंसक यह परम श्रेष्ठ शिवपुराण है । हे मुने ! यह भगवान् शिव के द्वारा कहा गया है ।८। जिसने जन्म जन्मान्तर अत्यन्त श्रेष्ठ और पुण्यकर्म किये हों, उस मनुष्य की अत्यन्त प्रीति इस महापुराण के श्रवण में होती है ।९। यह शिवपुराण परमश्रेष्ठ शास्त्र है । पृथिवी में इस शिव-स्वरूप ही जानकर श्रद्धापूर्वक इसका सदा सेवन करे ।१०। इसके पढ़ने और श्रवण करने से मनुष्य शीघ्र ही श्रेष्ठ भक्ति से सम्पन्न होता और उसे शिव-साधन रूप परम पद की शीघ्र प्राप्ति होती है ।११। इसलिये मनुष्यों को इसे सब प्रकार से पढ़ना ही उचित है । क्योंकि इसके प्रेमपूर्वक पढ़ने से सभी कामनाओं की पूर्ति होती है ।१२।

पुराणश्रवणाच्छम्भोर्निष्पापो जायते नरः ।
भुक्त्वा भोगान्सुविपुलञ्छिवलोकमवाप्नुयात् ।१३।
राजसूयेन यत्पुण्यमग्निष्टोमशतेन च ।
तत्पुण्यं लभते शम्भोःकथाश्रवणमात्रतः ।१४।
ये शृण्वन्ति मुने शैवं पुराणं शास्त्रमुत्तमम् ।
ते मनुष्या न मन्तव्या रुद्रा एव न संशयः ।१५।
शृण्वतां तत्पुराणं हि तथा कीर्तयतां च तत् ।
पादाम्बुजरजांस्येव तीर्थानि मुनयो विदुः ।१६।
गन्तुं निःश्रेयस स्थानं येऽभिवाञ्छंति देहिनः ।
शैवम्पुराणममलं भक्त्या शृणुवन्तु ते सदा ।१७।
सदा श्रोतुं यद्यशक्तो भवेत्स मुनिसत्तम् ।
नियतात्मा प्रतिदिनं शृणुयाद्वा मुहूर्तकम् ।१८।
यदि प्रतिदिनं श्रोतुमशक्तो मानवो भवेत् ।
पुण्यं मासादिषु मुने श्रूयाच्छिवपुराणकम् ।१९।

शिव पुराण का श्रवण करने से मनुष्य सभी पापों से छूट जाता और अनेक भोगों का उपभोग करने पर अन्त में उसे शिवलोक की प्राप्ति होती है ।१३। राजसूय यज्ञ या सौ अग्निष्टोम से जो पुण्य प्राप्त होता है, वह पुण्य शिवजी की कथा सुनने मात्र से ही मिल जाता है ।१४। हे मुने ! श्रेष्ठ शिव पुराण का जो मनुष्य श्रवण करते हैं, वे मनुष्य नहीं, वरन् साक्षात् रुद्र रूप ही हैं, इसमें सन्देह नहीं है ।१५। इसके सुनने वालों और कीर्तन करने वालों की चरणरज भी तीर्थ स्वरूप हैं, ऐसा मुनि-जनों का कथन है ।१६। कल्याणप्रद स्थान की कामना वाले जीवों को नित्य शिवजी के निर्मल पुराण का श्रवण करना चाहिए ।१७। यदि सब काल सुनने में समर्थ न हो तो नियमर्वक दो घड़ी ही इसे सुने ।१८। यदि प्रति दिन सुनने में समर्थन न हो तो पवित्र महीनों में श्रवण करे ।१९।

मुहूर्तं वा तदर्द्धं वा तदर्द्धं वा क्षणं च वा
ये शृण्वन्ति पुराणं तन्न तेषां दुर्गतिर्भवेत् ।२०।

तत्पुराणं च शृण्वानः पुरुषो यो मुनीश्वर ।
स निस्तरति संसारं दग्ध्वा कर्ममहाटवीम् ।२१।
तत्पुण्यं सर्वदानेषु सर्वयज्ञेषु वा मुने ।
शम्भोः पुराणश्रवणात्तत्फलं निश्चल भवेत् ।२२।
विशेषतः कलौ शैवपुराण श्रवणादृते ।
परो धर्मो न पुंसां हि मुक्तिसाधनकृत्मुने ।२३।
पुराणश्रवणं शम्भोर्नामसंकीर्तनं तथा ।
कल्पद्रुमफल सम्यङ्मनुष्याणां न संशयः ।२४।
कलौ दुर्मेधसां पुंसां धर्माचारोज्झितात्मनाम् ।
हिताय विदधे षम्भुः पुराणाख्यं सुधारसम् ।२५।
एकोऽजरामरः स्याद्वै पिबन्नेवामृतं पुमान् ।
शम्भोः कथामृतं कुर्यात्कुलमेवाजरामरम् ।२६।

जो व्यक्ति एक मुहुर्त, उससे आधा या क्षणमात्र को भी सुनते हैं, वे दुर्गति को प्राप्त नहीं होते ।२०। हे मुनीश्वर ! इस महा पुराण को जो प्राणी सुनते हैं, वे कर्म रूपी विकराल वन को भस्म कर संसार-सागर से पार हो जाते हैं ।२१। हे मुने ! सम्पूर्ण यज्ञों से जो फल प्राप्त होता है, वह शिव पुराण के सुनने से अवश्य मिल जाता है ।२२। विशेषकर कलि काल में मुक्ति का साधन रूप, शिवपुराण के अतिरिक्त कोई अन्य धर्म नहीं है ।२३। सुनना या उनका नाम संकीर्तन करना, मनुष्यों के लिये कल्प वृक्ष के समान फलदायी है, इसमें सन्देह नहीं है ।२४। कलियुग के जिन दुर्मधी पुरुषों ने अपने धर्म को छोड़ दिया है, उनके लिए भी यह अमृत रूप हित करने वाला है ।२५। इस अमृत को जो पुरुष पीता है, वह अजर अमर हो जाता है और शिवजी के कथा-मृत से कुल को भी अजर अमर कर देता है ।२६।

सदा सेव्या सदा सेव्या सदा सेव्या विशेषतः ।
एतच्छिवपुराणस्य कथा परमपावनी ।२७।
एतच्छिवपुराणस्य कथाश्रवणमात्रतः ।
किं ब्रवीमि फलं तस्य शिवश्चित्तं समाश्रयेत् ।२८।

एतच्छिवपुराणस्य कथा भवति यद्गृहे ।
तीर्थभूतं हि तद्गेहं बसतां पापनाशनम् ।२६।
अश्वमेधसहस्राणि बाजपेयशतानि च ।
कलां शिवपुराणस्य नार्हन्ति खलु षोडशीम् ।३०।
गंगाद्याः पुण्यनद्यश्च सप्तपुर्य्यो गया तथा ।
एतच्छिवपुराणस्य समतां यांति न क्वचित् ।३१।
नित्यं शिवपुराणस्य श्लोकं श्लोकार्द्धमेव च ।
स्वमुखेन पठेद्भक्त्या यदीच्छेत्परमां गतिम् ।३२।
एतच्छिवपुराणं यो वाचयेदर्थतोऽनिशम् ।
पठेद्वा प्रीतितो नित्यं स पुण्यात्मा न संशयः ।३३।

विशेशकर इसका सर्वदा सेवन करे । इसकी कथा परम पवित्र करने वाली है ।२७। इस कथा के सुनने मात्र से ही जो फल प्राप्त होता है, उसे मैं क्या कहूं ? शिवजी में अपने मन को समर्पण करदे ।२८। जिस गृह में शिवपुराण की कथा होती है, वह साक्षात् तीर्थ के समान है, उसमें निवास करने से पापों का नाश हो जाता है ।२६। हजार अश्वमेध और सौ वाजपेय यज्ञ भी शिवपुराण की सोलहवीं कला के समान नहीं है ।३०। सहस्र गङ्गा आदि सप्त नदी, सप्तपुरी तथा गया भी इस की समता नहीं कर सकतीं ।३१। परमगति की कामना वाले पुरुष को भक्तिपूर्वक नित्यप्रति शिवपुराण का एक या आधे श्लोक का पाठ करना चाहिये ।३२। इस का जो पुरुष भक्तिपूर्वक पाठ करता और नित्य श्रवण करता है, उसके पुण्यात्मा होने में सन्देह नहीं है ।३३।

एतच्छिवपुराणं यः पूजयेन्नित्तमादरात् ।
स भुक्त्वेहाखिलान्कामानंते शिवपदं लभेत् ।३४।
एतच्छिवपुराणस्य कुर्वन्नित्यमतन्द्रितः ।
पट्टवस्त्रादिना सम्यक् सत्कारं स सुखी सदा ।३५।
शैवं पुराणममलं शैवसर्वस्वमादरात् ।
सेवनीयं प्रयत्नेन परत्रेह सुखेप्सुना ।३६।
चतुर्वर्गप्रदं शैवं पुराणममलं परम् ।

श्रोतव्यं सर्वदा प्रीत्या पठितव्यं विशेषतः ।३७।
देवेतिहासशास्त्रेषु परं श्रेयस्करं महत् ।
शैवं पुराणं विज्ञेयं सर्वथा हि मुमुक्षिभिः ।३८।
शैवंपुराणमिदमात्मविदांवरिष्ठं सेव्यंसदापरमवस्तुसतांसमर्च्यम् ।
तापत्रयाभिशमनंसुखदंसदैवप्राणप्रियं विधिहरीशमुखामराणाम् ।।
वन्दे शिवपुराणं हि सर्वदाऽहं प्रसन्नधीः ।
शिवः प्रसन्नतां यायाद्दद्यात्स्वपदयो रतिम् ।४०।

इस का आदर पूर्वक नित्य प्रति पूजन करने वाले मनुष्य सभी कामनाओं को भोग कर अन्त में शिवपद को प्राप्त होते हैं ।३४। नित्यप्रति निरालस्य होकर इसका पाठ करने से तथा नित्य पट्ट वस्त्रादि से सत्कार करने से सर्वदा सुख की प्राप्ति होती है ।३५। यह अत्यन्त स्वच्छ एवं सर्वस्व है । जिसे दोनों लोकों में सुख प्राप्ति की इच्छा हो उसे आदर पूर्वक इसका पाठ करना चाहिए ।३६। यह निर्मल शिवपुराण चतुर्वर्ग का दाता है । इसका पाठ एवं श्रवण सदा प्रीतिपूर्वक करना चाहिए ।३७। वेद, इतिहास तथा शास्त्रों में यह परम श्रेय प्रदायक है इसलिये मुमुक्ष जनों को सदा शिव पुराण का ज्ञान आवश्यक है ।३८। आत्म ज्ञानियों के लिये यह शिवपुराण अत्यन्त उत्तम है । पपम वस्तु सदा सेवनीय और सत्पुरुषों को पूजनीय है । त्रिताप नाशक, सुखदायक है तथा ब्रह्मा, विष्णु और देवतागणों के लिये प्राणों के समान प्रिय है ।३९। मैं प्रसन्न होकर शिवपुराण को सदा प्रणाम करता हूं। शिवजी इसके द्वारा प्रसन्न होकर अपने चरणों की प्रीति मुझे प्रदान करें ।४०।

देवराजमुक्तिवर्णन

ये मानवाः पापकृतो दुराचाररताः खलाः ।
कामादिनिरता नित्यं तेऽपि शुद्ध्यन्त्यनेन वै ।१।
ज्ञानयज्ञः परोऽय वै भुक्तिमुक्तिप्रदः सदा ।
शोधनः सर्वपापानां शिवमन्त्रोषकारकः ।२।
तृष्णाकुलाः सत्यहीनाः पितृमातृविदूषकाः ।
दाम्भिका हिंसका ये च तेऽपि शुद्ध्यन्त्यनेन वै ।३।

स्ववर्णाश्रमधर्मेभ्यो वर्जिता मत्सरान्विताः ।
ज्ञानयज्ञेन तेऽनेन सम्पुनन्ति कलावपि ।४।
छलच्छद्मकरा ये च ये च क्रूराः सुनिर्दयाः ।
ज्ञानयज्ञेन तेऽनेन सम्पुनन्ति कलावपि ।५।
ब्रह्मस्वपुष्टाः सततं व्यभिचाररताश्च ये ।
ज्ञानयज्ञेन तेऽनेन सम्पुनन्ति कलावपि ।६।
सदा पापरता ये च ये शठाश्च दुराशयाः ।
ज्ञानयज्ञेन तेऽनेन सम्पुनन्ति कलावपि ।७।
मलिना दुर्धियोऽशान्ता देवताद्रव्यभोजिनः ।
ज्ञानयज्ञेन तेऽनेन सम्पुनन्ति कलावपि ।८।

सूतजी ने कहा—जो मनुष्य पाप, दुराचार, कामादिक से डूबे हुये हैं, वे भी इसके द्वारा शुद्ध हो जायेंगे ।१। यह परम भुक्ति और मुक्ति का दाता ज्ञान यज्ञ है। सब पापों का शोधनकर्त्ता और शिवजी का संतोष कराने में समर्थ है ।२। तृष्णा और व्याकुल और सत्य से हीन तथा माता पिता की हंसी उड़ाने वाले एवं हिंसक मनुष्य भी इसके द्वारा सुधर जाते हैं ।३। वर्णाश्रम धर्म से रहित तथा मत्सर युक्त प्राणी भी कलिकाल में इस ज्ञान यज्ञ के द्वारा संसार सागर के पार हो जाँयेंगे ।४। जो पुरुष छल करने वाले, क्रूर एवं निर्दय स्वभाव के हैं वे भी कलिकाल में इस ज्ञान यज्ञ के द्वारा पार हो जायेंगे ।५। जो व्यक्ति ब्राह्मणों के धन के द्वारा पुष्ट हुए तथा निरन्तर व्यभिचार कर्म में लगे रहते हैं, वे भी इस ज्ञान यज्ञ के प्रभाव से तर जायेंगे ।६। जो सदा पाप कर्म में रत, शठ एवं दुराशा से युक्त हैं वे भी कलियुग से इस ज्ञान यज्ञ के द्वारा पार हो जायेंगे ।७। मलीन एवं बुरी बुद्धि वाले अशान्त तथा देवताओं के द्रव्य को हड़पने वाले मनुष्य भी कलियुग में इस ज्ञान यज्ञ के द्वारा पार हो जायेंगे ।८।

।। चंचुला वैराग्य वर्णन ।।

शृणु शौनक वक्ष्यामि त्वदग्रे गुह्यमप्युत ।
यतस्त्वं शिवभक्तानामग्रणीर्वेदवित्तमः ।१।

समुद्रनिकटे देशे ग्रामो बाष्कलसंज्ञकः ।
बसन्ति यत्र पापिष्ठा वेदधर्मोज्झिता जनाः ।२।
दुष्टा दुर्विषयात्मानो निर्दैवा जिह्मवृत्तयः ।
कृषीवलाः शस्त्रधराः परस्त्रीभोगिनः खलाः ।३।
ज्ञानवैराग्यसद्धर्म न जानन्ति परं हिते ।
कुकथाश्रवणाढयेषु नि रताः पशुबुद्धयः ।४।
अन्ये वर्णाश्च कुधियः स्वधर्म वि मुखाः खलाः ।
कुकर्म निरता नित्यं सदा विशयिणश्चते ।५।
स्त्रियः सर्वाश्च कुटिलाः स्वैरिण्यः पापलालसाः ।
कुस्त्रियो व्यभिचारिण्यः सद्व्रताचारवर्जिताः ।६।
एवं कु जनसंवासे ग्रामे बाष्कलसंज्ञिते ।
तत्रैको बिन्दुगोनाम विप्र आसीन्महाधमः ।७।

सूतजी ने कहा—हे शौनक ! मैं तुमसे अत्यन्त गुह्य कथा कहता हूं, क्योंकि तुम शिव भक्तों में सर्व प्रथम ही ।१। समुद्र के निकट एक देश में बाष्कल नामक ग्राम था, उसमें वेद-धर्म से विमुख पापीजन रहते थे ।२। दुष्ट, दुर्विषयी तथा कुटिल वृत्ति वाले, कृषि कर्म में लगे हुए, शस्त्र बल पर निर्भर रहने वाले और पर-स्त्री भोगी थे ।३। वे ज्ञान-वैराग्य स्वरूप अपने धर्म से अज्ञान, पशुबुद्धि व्यक्ति बुरी वार्ता सुनने में ही रुचि रखते थे, क्योंकि उनकी बुद्धि पशु से समान थी ।४। अन्य वर्ण के लोग भी कुबुद्धि वाले थे । सदा अपने धर्म के विमुख रहते और विषय भोगों में रत तथा कुकर्म करने वाले थे ।५। सभी स्त्रियाँ स्वैरिणी, कुटिल और पापकर्म की इच्छा वाली थीं । सत् व्रत और आचार से रहित तथा व्यभिचारिणी थीं ।६। बुरे व्यक्तियों वाले उस ग्राम में बिदुन नामक अत्यन्त अधर्मी ब्राह्मण भी निवास करता था ।७।

स दुरात्मा महापापी सुदारोऽपि कुमार्गगः ।
वेश्यापतिर्बभूवाथ कामाकुलितमानसः ।८।
स्वपत्नीं चंचुलां नाम हित्वा नित्य सुधर्मिणीम् ।
रेमे स वेश्यया दुष्टः स्मरबाणप्रपीडितः ।९।

एवं कालो व्यतीयाय महास्तस्य कुकर्मण: ।
सा स्वध र्मभयात्क्लेशात्स्मरार्तापि च चंचुला ।१०।
अथ तस्याङ्गना सापि प्ररूढनवयौवना ।
अविषत्यस्मरावेशा स्वधर्माद्विरराम ह ।११।
जारेण संगता रात्रौ रेमे पापेन गुप्तत: ।
पतिर्दृष्टि वञ्चयित्वा भ्रष्टसत्वा कुमार्गगा ।१२।
कदाचित्तां दुराचारां स्वपत्नीं चंचुलां मुने ।
जारेण संगतां रात्रौ ददर्श स्मरविह्वलाम् ।१३।
दृष्टा तां दूषितां पत्नीं कुकर्मासक्तमानसाम् ।
जारेण संगतां रात्रौ क्रोधाद्द्रु दाव वेगत: ।१४।

वह अत्यन्त पापी, दुरात्मा और स्त्री सहित कुमार्ग पर चलने वाला, काम से व्याकुल होकर वेश्या का पति बना ।८। वह चंचुला नामक से अपनी पत्नी का त्याग कर काम-बाण से पीड़ित होकर वेश्या के साथ रहने लगा ।९। इस इकार उस कुकर्मी को बहुत समय व्यतीत हो गया । उसकी पत्नी चंचुला अपने धर्म और क्लेश का भय होते हुए भी काम से आक्रान्त हो गई ।१०। वह अत्यन्त तरुणाई को प्राप्त थी, उसने कामदेव से महान् पीड़ित होकर अपने धर्म का त्याग कर दिया ।११। जार की संगति में अपने पति की दृष्टि बचाकर रहने लगी । वह अपने सत से भ्रष्ट तथा कुमार्ग-गामिनी हो गई ।१२। एक समय उसके पति ने उस दुराचारिणी को रात्रि के समय जार के साथ देख लिया ।१३। वह उस कुमार्ग गामिनी दुष्टा को जार के साथ रमण करती देखकर अत्यन्त क्रोध पूर्वक उसकी ओर दौड़ा ।१४।

तमागतं गृहे दुष्टमाज्ञाय बिन्दुगं खल: ।
पलायितो द्रुतं जारो वेगतच्छद्मवान्स वै ।१५।
अथ स बिन्दुग: पत्नीं गृहीत्वा सुदुराशय: ।
मुष्टिबन्धेन संतर्ज्य पुन:पुनरताडयत् ।१६।
सा नारी ताडिता भर्त्रा चंचुला स्वैरिणी खला ।
कुपिता निर्भया प्राह स्वपतिं बिन्दुगं खलम् ।१७।

भवान्प्रतिदिनं कामं रमते वेश्यया कुधीः ।
मां विहाय स्वपत्नीं च युवतीं पतिसेविनीम् ।१८।
रूपपत्या युवत्याश्च कामाकुलितचेतसः ।
विना पति विहारं स्यात्का गतिर्मे भवान्वदेत् ।१९।
अहं महारूपवती नवयौवनविह्वला ।
कथं सहे कामदुःखंतव सङ्गं विनाऽऽर्तधीः ।२०।
इत्युक्तः स तया मूर्खो मूढधीर्ब्राह्मणोऽधमः ।
प्रोवाच बिन्दुगः पापो स्वधर्मविमुखः खल ।२१।

पति को रात्रि के समय घर में आया देखकर स्त्री ने जार को संकेत किया और वह छली वहाँ से भाग गया ।१५। तब बिन्दुग ने उसे पकड़ लिया और मुष्टिकाप्रहार से बारम्बार मारने लगा ।१६। अपने पति के द्वारा पिटी हुई चंचुला क्रोध ले भय-रहित होती हुई इस प्रकार कहने लगी ।१७। चंचुला बोली—आप जो नित्यप्रति वेश्या के प्रेम में फँसे रहते हो और मैं नित्यप्रति तुम्हारी सेवा करती हूँ। तुम मेरा त्याग करते हो ।१८। बताओ जो सौन्दर्यमयी काम से व्याकुल है, उसकी पति से रमण करने केबिना क्या गति होगी ? ।१९। मैं अत्यन्त रूपवती, नवयौवन से युक्त तथा काम से व्याकुल हूं । तुम्हारे साथ रमण किए बिना मैं काम का सन्ताप किस प्रकार सहन कर सकती हूँ ? ।२०। सूतजी ने कहा—चंचुला के ऐसा कहने पर ब्राह्मणों में नीच एवं अपने धर्म से हीन मति वाले पापी बिन्दुग ने उससे कहा ।२१।

सत्यमेतत्त्वयोक्तं हि कामव्याकुलचेतसा ।
हितं वक्ष्यामि तस्मात्त्वं शृणु कांते भयं त्यज ।२२।
जारैर्विहर नित्यं त्वं चेतसा निर्भयेन व ।
धनमाकर्ष तेभ्यो हि दत्त्वा तेभ्यः परां रतिम् ।२३।
तद्धनं देहि सर्वं मे वेश्यासंसक्त चेतसः ।
महत्स्वार्थं भवेन्नूनं तवापि च ममापि च ।२४।
इति भर्तृवचः श्रुत्वा चंचुला तद्वधूश्य सा ।
तथेपि भर्तृवचनं प्रतिजग्राह हृष्टधीः ।२५।

कृत्वैवं समयं तौ वै दम्पती दुष्टमानसौ ।
कुकर्मनिरतौ जातौ निर्भयेन कुचेतसा ।२६।
एवं तयोस्तु दम्पत्योर्दुराचारप्रवृत्तयोः ।
महान्कालो व्यतीयाय निष्फलो मूढचेतसोः ।२७।

विन्दुग ने कहा—हे काम से व्याकुल चित्त वालो ! मैं हित की बात कहता हूं, उसे भय छोड़कर सुन ।२२। तू निर्भय मन से जार के साथ समागम कर, परन्तु उसे प्रसन्न करके धन भी तो प्राप्त कर २३। और उस सम्पूर्ण धन को मुझ वेश्या के साथ गमन करने वाले अपने पति को दे दे । इस कार्य में मेरा और तेरा, दोनों का ही स्वार्थ निहित है ।२४। सूतजी ने कहा—अपने पति की बात सुनकर चंचुला ने 'बहुत अच्छा' कहा और फिर अत्यन्त प्रसन्नता पूर्वक दोनोंही दुष्ट हृदय परस्पर निर्भय चित्त होकर अत्यन्त कुकर्म में संलग्न हो गये ।२५-२६। इस प्रकार दुराचार में लगे रहने वाले उन दोनों स्त्री-पुरुषों को बहुत-सा समय व्यतीत हो गया और वे मूढ़ मन वाले नितान्त निष्फल रहे ।२७।

अथ विप्रः स कुमतिर्बिन्दुगो वृषलीपतिः ।
कालेन निधनं प्राप्तो जगाम नरकं खलः ।२८।
भुक्त्वा नरकदुःखानि बह्वहानि स मूढधीः ।
विन्ध्येऽभवत्पिशाचो हि गिरौ पापी भयङ्करः ।२९।
मृते भर्तरि तस्मिन्वै दुराचाररेऽथ बिन्दुगे ।
उवास स्वगृहे पुत्रैश्चिरकालं विमूढधीः ।३०।
एवं विहरती जारैः स नारी चांचुलताह्वया ।
आसीत्कामरता प्रीता किञ्चिदुत्क्रान्तयौवना ।३१।
एकदा दैवयोगेन सम्प्राप्ते पुण्यपर्वणि ।
सा नारी बन्धुभिः सार्द्धं गोकर्ण क्षेत्रमाययौ ।३२।
प्रसङ्गात्सा तदा त्वा कस्मिंश्चित्तीर्थपाथसि ।
सस्नौ सामान्यतो यत्र तत्र बभ्राम बन्धुभिः ।३३।

समय पाकर वह मूढ़ वृषलीपति मृत्यु को प्राप्त हो गया और उसे घोर नरक की प्राप्ति हुई ।२८। बहुत काल तक नरक-दुःख भोग कर

वह मूढ़ बड़ा भयंकर एवं महापापी पिशाच होकर विंध्य पर्वत में रहने लगा ।२९। जब उस दुराचारी को मृत्यु हो गयी तब वह चंचुला पुत्रों के साथ बहुत समय तक अपने गृह में निवास करती रही ।३०। वह जारों के साथ निरन्तर सम्पर्क बनाये रही । परन्तु काम से सुख मानने वाली उस स्त्री का यौवन कुछ-कुछ व्यतीत हो गया ।३१। दैवयोग से एक समय पुण्य पर्व के आने पर वह मारी अपने बान्धवों के साथ गोकर्ण क्षेत्र में जा पहुँची ।३२। प्रसंगवश उसने किसी एक तीर्थ के जल में स्नान किया और बन्धुजनों के साथ इस क्षेत्र में भ्रमण करने लगी ।३३।

देवालयेऽथ कस्मिश्चिद्दैवज्ञमुखतः शुभाम् ।
शुश्राव सत्कथां शम्भोः पुण्यां पौराणिकीं च सा ।३४।
योषितां जारसक्तानां नरके यमकिंकरा ।
संतप्तलोहपरिघं शिपन्ति स्मरमन्दिरे ।३५।
इति पौराणिकेनोक्तां श्रुत्वा वैराग्यवर्द्धिनीम् ।
इति पौराणिकेनोक्तां श्रुत्वा वैराग्यवर्द्धिनीम् ।
कथामासीद्भयोद्विग्ना चकम्पे तत्र सा च वै ।३६।
कथासमाप्तौ सा नारी निर्गतेषु जनेषु च ।
भीता रहसि तं प्राह शैवं सं वाचकं द्विजम् ।३७।
ब्रह्मंस्त्वं श्रृणवसद्वृत्तमजानन्त्या स्वधर्मकम् ।
श्रुत्वा मामुद्धर स्वामिकृन्कृपां कृत्वातुलामपि ।३८।
चरितं सूल्बणं पापं मया मूढधिया प्रभो ।
नीतं पौश्चल्यतः सर्वं यौवनं मदनान्धया ।३९।
श्रुत्वेदं वचनं तेऽद्य वैराग्यरसजृम्भितम् ।
जाता महाभया साऽहं सकम्पात्तयियोगिका ।४०।

वहां किसी देवालय में किसी पण्डित के मुख से उसने शिव पुराण की कथा श्रवण की ।३४। कि जो नारी जार के साथ रमण करती है उसे यजदूत नरक में ले जाते और उसके यौन स्थानमें लोहे का बनातप्त मुसल प्रविष्ट करते हैं ।३५। इस प्रकार वैराग्य की वृद्धि करने वाली पुराणकथा को सुनकर चंचुला अत्यन्त भय से उद्विग्न होकर कांपने लगी ।३६। जब कथा पूरी हो गई और सभी श्रोता वहाँ से चले गये तब

वह भयभीत उस कथावाचक से एकान्त में प्रश्न करने लगी ।३७। चंचुला ने पूछा—हे ब्रह्मन् ! आप मुझे असत् वृत्त कारी स्त्री समझकर मेरा वृत्तान्त सुनें और अत्यन्त कृपापूर्वक मेरा उद्धार करें ।३८। मेरा चरित्र अत्यन्त घृणित है । मुझ मूर्खा ने अपना यौवन अज्ञान के कारण व्यभिचार में व्यतीत कर डाला । मैं उस समय मदान्ध हो चुकी थी ।३९। आपके वैराग्य रस से परिपूर्ण वचन सुनकर मैं अत्यन्त भयभीत हो उठी हूं और मेरा हृदय कम्पायमान हो रहा है ।४०।

धिङ् मां मूढधियं पापां काममोहितचेतसम् ।
निन्द्यां दुर्विषयासक्तां विमुखीं हि स्वधर्मतः ।४१।
यदल्पस्य सुखस्यार्थे स्वकायस्य विनाशिनः ।
महापापं कृतं घोरमजानन्त्याऽतिकष्टदम् ।४२।
यास्यमिदुर्गतिं कां कां घोरां हा कष्टदायिनीम् ।
को ज्ञो यास्यति मां तत्र कुमारगरतमानसाम् ।४३।
मरणे यमदूतांस्तान्कथं द्रक्ष्ये भयंकरान् ।
कथं पाशैर्बलात्कण्ठे बध्यमाना धृतिं लभे ।४४।
कथं सहिष्ये नरके खंडशो देहकृन्तनम् ।
यातनां तत्र महतीं दुःखदां च विशेषतः ।४५।
दिवा चेष्टामिन्द्रियाणां कथं प्राप्स्यामि शोचती ।
रात्रौ कथं लभिष्येऽहं निद्रां दुःखपरिप्लुता ।४६।
हा हतास्मि च दग्धास्मि विदीर्णहृदयास्मि च ।
सर्पथाऽहं विनष्टाऽस्मि पापिनी सर्वथाप्यहम् ।४७।

मैं काम से भ्रमित चित्त हुई मूढ़ बुद्धि वाली स्त्री हूं । मुझे धिक्कार है जो मैंने अपने धर्म से विमुख होकर निंदित कुधर्म को प्राप्त किया है । ।४१। जो मैं स्वल्प सुख के आकर्षण में अपने कार्य को नष्ट कर देने वाले अत्यन्त कष्टकारी घोर दुष्कर्म में प्रवर्त्त हो गयी ।४२। अब मैं किस घोर कष्ट देने वाली दुर्गति को पाऊँगी और मुझ कुमार्ग में मन रमाने वाली स्त्री की रक्षा वहाँ कौन करेगा ? ।४३। मृत्यु को प्राप्त करने पर मैं उन यमदूतों को किस प्रकार देखूँगी । जब वे यमदूत मुझे

कठोर पाशों में बाँधेंगे तब मुझे विश्राम कैसे प्राप्त होगा ? ।४४। जब नरक में देह के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे, तब मैं उसे किस प्रकार सहन करूंगी ? वहाँ तो अत्यन्त दुःसह्य यातना प्राप्त होती हैं ।४५। उन इन्द्रियों की चेष्टा का ध्यान करती हुई मैं किस प्रकार देख सकूंगी। दुःख से युक्त हुई मैं रात्रि में किस प्रकार सो सकूंगी ।४६। मैं विदीर्ण हृदय वाली सब प्रकार दग्ध और नष्ट हो चुकी हूं, क्योंकि मैं अत्यन्त पाप कर्म वाली हूँ ।४७।

हा विधे मां महापापे तत्त्वा दुःशेमुषीं हठात् ।
अपैति यत्स्वधर्माद्व सर्वसौख्यकरादहो ।४८।
शूलप्रोतस्य शैलाग्रात्पततस्तुङ्गसो द्विज ।
यद्दुःखं देहिनो घोरं तस्मात्कोटिगुणं मम ।४९।
अश्वमेधशतं कृत्वा गंगा स्नात्वा शतं समाः ।
न शुद्धिर्जायते प्रायो मत्पापस्य गरीयसः ।५०।
किं करोमि क्व गच्छामि कं वा शरणमाश्रये ।
कस्त्रायेत मां लोकेऽस्मिन्पतन्तीं नरकार्णवे ।५१।
त्वमेव मे गुर्ब्रह्मं स्त्वं माता त्वं पिताऽसि च ।
उद्धरोद्धर मां दीनां त्वमेव शरणं गताम् ।५२।
इति संजातनिर्वेदां पतिमाञ्चरणद्वये ।
उत्थाप्य कृपया धीमान्वभाषे ब्राह्मणः स हि ।५३।

हा विधना ! तुमने हठपूर्वक यह घोर पापमयी बुद्धि प्रदान कर क्या किया, जो सब सुखों को प्रदान करने वाले धर्म से हीन बना देती हैं ।४८। हे महात्मन् ! शूल से गोदने पर और पर्वत से गिरने पर जो पीड़ा होती है, मुझे उससे करोड़ गुनी हो रही है ।४९। सौ अश्व-मेध यज्ञ कर लेने पर तथा सौ वर्ष तक निरन्तर गंगा स्नान करने पर भी मेरे घोर पाप का शोधन नहीं हो सकता ।५०। मैं क्या करूं ? कहाँ जाऊं ? किसकी शरण में पहुँचूं ? मुझ नरक सागर में गिरी हुई स्त्री की रक्षा करने में इस लोक में समर्थ कौन है ? ।५१। हे ब्रह्मन् ! आप ही मेरे गुरु और माता-पिता हैं। कृपा कर आप मुझ दीन का उद्धार

कीजिये। मैं आपकी शरण को प्राप्त हुई हूँ।५२। सूतजी ने कहा—जब चंचुला इस प्रकार निर्वेद को लाप्त होकर ब्राह्मण के चरणों में गिर पड़ी तब कृपापूर्वक उसे उठाकर ब्राह्मण ने कहा।५३।

॥ चंचुला की सद्गति ॥

दिष्ट्या काले प्रबुद्धासि शिवानुग्रहतो वराम्।
इमां शिवपुराणस्य श्रुत्वा वैराग्यवत्कथाम्।१।
मा भैषीर्द्विजपत्नि त्वं शिवस्य शरणं व्रज।
शिवानुग्रहतः सर्वं पापं सद्यो विनश्यति।२।
सत्कथाश्रवणादेव जाता ते मतिरीदृशी।
पश्चात्तापान्विता शुद्धा वैराग्यं विषयेषु।३।
पश्चात्तापः पापकृतां निष्कृतिः परा।
सर्वेषां वर्णितं सद्भिः सर्वपापविशोधनम्।४।
पश्चात्तापेनैव शुद्धिः प्रायश्चित्तं करोति सः।
यथोपदिष्टं सद्भिर्हि सर्वपापविशोधनम्।५।
प्रायश्चित्तमधीकृत्य विधिवन्निर्भयः पुमान्।
स याति सुगतिं प्रायः पश्चात्तापी न संशयः।६।
एतच्छिवपुराणस्य कथाश्रवणतो यथा।
जायते चित्त शुद्धिर्हि न तथान्यैरुपायतः।७।

ब्राह्मण ने कहा—तू भाग्यवश ही ज्ञान को प्राप्त हुई है। शिवजी का तेरे ऊपर बड़ा अनुग्रह है जो तू शिवपुराण की वैराग्यमयी कथा सुनकर ही ज्ञान को प्राप्त कर सकी।१। हे विप्रपत्नी! भय मत करो और शिवजी की शरण में जा। शिवजी के अनुग्रह से सब पाप शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं।२। उनकी सत्कथा सुनने से ही तेरी मति ऐसी हुई है, जिससे तू पश्चात्ताप करके शुद्ध हुई और विषयों से विरक्त हो गई है।३। पश्चात्ताप ही पापों की परम निष्कृति है। विद्वज्जनों ने पश्चात्ताप से सब प्रकार के पापों की शुद्धि होना कथन किया है।४। पश्चात्ताप करने से जिसके पापों का शोधन न हो, उसे प्रायश्चित करना चाहिये। विद्वानों ने इससे सब पापों का शोधन होना कहा है।५। विधिपूर्वक अनेक प्रकार

के प्रायश्चित करने पर भी मनुष्य भयभीत नहीं होपाता। परन्तु पश्चा-ताप करने वाले को सुगति की प्राप्ति होती है।६। इसके सुनने से जैसी चित्त शुद्धि है, वैसी अन्य उपायों से नहीं होती।७।

अतः सर्वस्व वर्गस्यैतत्कथासाधनं मतम्।
एतदर्थं महादेवो निर्ममे त्वाग्रहादिमाम्।८।
कथया सिद्ध्यति ध्यानमनया गिरिजापतेः।
ध्यानाज्ज्ञानं परं तस्मात्कैवल्यं भवति ध्रुवम्।९।
असिद्धशंकरध्यानः कथामेव शृणोति यः।
स प्राप्यान्यभवे ध्यानं शंभोर्यातिः परां गतिम्।१०।
एतत्कथाश्रवणतः कृत्वा ध्यानमुमापतेः।
ते पश्चात्तापिनः पापा बहवः सिद्धिमागताः।११।
सर्वेषां बीजं सत्कथाश्रवणं नृणाम्।
यथावर्त्मसमाराध्यं भवबन्धगदापहम्।१२।
कथाश्रवणतः शम्भोर्मननाच्च ततो हृदा।
निदिव्यासनतश्चैव चित्तशुद्धिर्भवत्यलम्।१३।
ध्यायतः शिवपदाब्जं चतसा निर्मलेन वै।
एकेन जन्मना मुक्तिः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।१४।

इसलिए सभी को शिवपुराण की कथा सुननी चाहिये। इसी उद्देश्य से शिवजी ने इसे बनाया है। क्योंकि यह सभी वर्ग का साधक है।८। इस कथा के द्वारा शिवजी का ध्यान सिद्ध हो जाता है। ध्यान से ज्ञान की सिद्धि होती और ज्ञान से कैवल्य प्राप्त होता है।९। जिसे शंकर का ध्यान सिद्ध नहीं है, वह यदि इस कथा को सुने तो उसे शिवजी के ध्यान की सिद्धि होती है और वह परमगति को प्राप्त होता है।१०। इस कथा को सुनकर भगवान् शिवजी का ध्यान करके पश्चात्ताप करने वाले पुरुष सिद्धि को प्राप्त हो चुके हैं।११। इस सत्कथा को सुनने वाले पुरुष सभी प्रकार के मङ्गल को प्राप्त होते और शिवजी की आराधना करने से उनकी संसार व्याधि छूट जाती है।।१२। शिव की कथा सुन-कर मनन करने से तथा निदिध्यासन के द्वारा चित्त की पूर्ण शुद्धि

हो जाती है ।१३। स्वच्छ चित्त से शिवजी के चरणकमल का ध्यान कर एक जन्म में ही तू मुक्ति को प्राप्त हो जायगी यह मैं सत्य कहता हूं ।१४

अथ बिंदुगपत्नी सा चंचुलाह्त्वा प्रसन्नधीः ।
इत्युक्ता तेन विप्रेण समासीद्बाष्पलोचना ।१५।
पपातारं द्विजेन्द्रस्य पादयोस्तस्य हृष्टधीः ।
चञ्चुला साञ्जलिः सा च कृतार्थास्मीत्यभाषत ।१६।
अथ सोत्थाय सातका साञ्जलिर्गद्गदाक्षरम् ।
तमुवाच महाशैवं द्विजं वैराग्ययुक्सुधीः ।१७।
ब्रह्मञ्छैववर स्वामिन्धन्यस्त्वं परमार्थदृक् ।
परोपकार निरतो वणनीयः सुसाधुषु ।१८।
उद्धरोद्धर मां साधो पतन्ती नरकार्णवे ।
श्रुत्वा यां सुकथां शवीं पुराणार्थविजृम्भिताम् ।१९।
विरक्तधीरहं जाता विषयेभ्यश्च सवतः ।
सुश्रद्धा महती ह्येतत्पुराणश्रवणेऽधुना ।२०।

तब चंचुला उसके वचनों से प्रसन्न हुई और उसके नेत्रों में आनन्दाश्रु आ गये ।१५। वह प्रसन्नतापूर्वक ब्राह्मण के चरणों में गिर गई और हाथ जोड़कर बोली, हे ब्रह्मन् ! मैं कृतार्थ होगई हूं ।१६। और अत्यन्त शान्तिपूर्वक उठकर प्रसन्न होती हुई गद्गद वाणी द्वारा वैराग्यमय वचन उस महाशैब्य से बोली ।१७। चंचुला ने कहा—हे ब्रह्मन् ! आप शिव-भक्तों में श्रेष्ठ हैं । परमार्थ के देखने वाले, परोपकार में निरत तथा साधुओं में उत्तम हैं ।१८। हे भगवन् ! मैं नरक सागर में गिरती जा रही हूं आप मेरा उद्धार करिये । जिस पुराण के अर्थ वाली शिव-कथा को सुनकर मैं पाप कर्मों से विरक्त हुई हूं, उस कल्याणकारी पुराण को श्रवण करने की मुझे अत्यन्त श्रद्धा उत्पन्न हुई है ।।१९-२०।।

इत्युक्त्वा साञ्जलिः सा वै संप्राप्य तदनुग्रहम् ।
तत्पुराणं श्रोतुकामाऽतिष्ठत्तत्सेवने रता ।२१।
अथ शैववरो विप्रस्तस्मिन्नेव स्थले सुधीः ।

सत्कथां श्रावयामास तत्पुराणस्य तां स्त्रियम् ।२२।
इत्थं तस्मिन्महाक्षेत्रे तस्मादेव द्विजोत्तमात् ।
कथां शिवपुराणस्य सा शुश्राव महोत्तमाम् ।२३।
भक्तिज्ञानविरागाणां वर्द्धिनीं मुक्तिदायिनीम् ।
बभूव सुकृतार्था सा श्रुत्वा तां सत्कथां पराम् ।२४।

सूतजी ने कहा—चंचुला हाथ जोड़कर इस प्रकार कहती हुई ब्राह्मण की कृपा को प्राप्त हुई और शिवपुराण सुनने की कामना से उसके समीप जा बैठी ।२१। वह शैव्यों में श्रेष्ठ विप्र उस पवित्र स्थान में उस स्त्री को शिवपुराण की पवित्र कथा सुनने लगे ।२२। उस विप्र श्रेष्ठ के मुख से चंचुला ने उस महान् क्षेत्र में बैठकर परमोत्तम शिवपुराण की कथा सुनी ।२३। वह कथा भक्ति, ज्ञान और वैराग्य की वृद्धि करने वाली और मोक्षदायिनी थी । चंचुला उस कथा को सुनकर कृतार्थ होगई ।२४।

।। बिन्दुग सद्गति ।।

सा कदाचिदुमां देवीमुपगम्य प्रणम्य च ।
सुतुष्टाव करौ बद्ध्वा परामानन्दसंप्लुता ।१।
गिरिजे स्कन्दमातस्त्वं सेविता सर्वदा नरै ।
सर्वसौख्यप्रदे शम्भुप्रिये ब्रह्मस्वरूपिणि ।२।
विष्णु ब्रह्मादिभिः सेव्या सगुणा निर्गुणापि च ।
त्वामाद्या प्रकृतिःसूक्ष्मा सच्चिदानन्दरूपिणी ।३।
सृष्टिस्थितिलयकरी त्रिगुण त्रिसुरायला ।
ब्रह्मविष्णुमहेशानां सुप्रतिष्ठाकरा परा ।४।
इति स्तुत्वा महेशीं तां चंचुला प्राप्तसद्गतिः ।
विरराम नतस्कन्धा प्रेमपूर्णाश्रुलोचना ।५।
ततः सा करुणाविष्ठा पार्वती शंकरप्रिया ।
तामुवाच महाप्रीत्या चंचुला भक्तवत्सला ।६।
चंचुले सखि सुप्रीतानया स्तुत्यास्मि सुन्दरि ।
किं याचसे वरं ब्रूहि नादेयं विद्यते तव ।७।

सूतजी ने कहा—एक समय चंचुला भगवती उमा के पास पहुँची और उन्हें प्रणाम कर परमानन्द पूर्वक कर जोड़कर प्रसन्न करने लगी ।१। चंचुला ने कहा—हे गिरजे ! हे स्कन्द माता ! आपकी मनुष्य सदा सेवा करते हैं । आप ही सदा सुख के देने वाली तथा साक्षात् ब्रह्म स्वरूप हो ।२। ब्रह्मा, विष्णु आदि के द्वारा सेवनीय आप सगुण निगुंण स्वरूप आद्या प्रकृति एवं सूक्ष्म सच्चिदानन्द स्वरूप वाली हो ।३। आप ही सृष्टि स्थिति और लय करने वाली त्रिगुणात्रिसुरालया एवं ब्रह्मा, विष्णु, महेश की सुप्रतिष्ठा करने वाली हो ।४। सूतजी ने कहा—सद्गति प्राप्त चंचुला ने भगवती उमा की इस प्रकार स्तुति की और नेत्रों में अश्रु लाती हुई शान्ति को प्राप्त हुई ।५। तब करुणामयी गिरिजा ने उस भक्त-वत्सला चंचुला से कहा—हे चंचुले ! मैं तेरी स्तुति से अत्यन्त प्रसन्न हुई हूं । तुझे जो कुछ वर माँगना हो माँग ले, तेरे लिये कोई भी वस्तु अदेय नहीं है ॥६—७॥

इत्युक्ता या गिरिजया चंचुला सुप्रणम्यताम् ।
पर्यपृच्छत सुप्रीत्या साञ्जलिर्नतमस्तका ।८।
मम भर्ताभुना क्वास्ते नैव जानामि तद्गतिम् ।
तेन युक्ता यथाहं वै भवामि गिरिजेऽनघे ।९।
तथैव कुरु कल्याणि कृपया दीनवत्सले ।
महादेवि महेशानि भर्ता मे वृषलीपति ।
तत्तः पूर्वं मृतः पापी न जाने कां गतिं गतः ।१०।
इत्याकर्ण्य वचस्तस्याश्चंचुलाया हि पार्वती ।
प्रत्युवाच सुसंबीत्या गिरिजा नयवत्सला ।११।
सुते भर्ता बिन्दुगाह्वो महापापी दुराशयः ।
वेश्याभोगी महामूढो मृत्वा स नरकं गतः ।१२।
भुक्त्वा नरकदुःखानि विविधान्यमिताः समाः ।
पापशेषेण पापात्मा विन्ध्ये जातः पिशाचकः ।१३।
इदानीं स पिशाचोऽस्ति नानाक्लेशसमन्वितः ।
तत्रैव वातभुग्दुष्टः सर्वकष्टवहः सदा ।१४।

सूतजी ने कहा—पार्वतीजी की बात सुनकर चंचुला ने हाथ जोड़े और प्रणामपूर्वक शिर झुका कर उनसे प्रश्न किया ।८। हे भगवती ! मेरा स्वामी इस समय कहाँ है ? मैं उसके विषय में नहीं जानती । हे कल्याणी ! वह मुझे मिल सके, ऐसी कृपा करिये ।९। हे महादेवी ! मेरा स्वामी वृषलीपति था । वह पापी मुझसे पहले ही मर गया, न जाने उसे कौन-सी गति प्राप्त हुई ।१०। सूतजी ने कहा—चंचुला की यह बात सुनकर भगवती पार्वतीजी प्रसन्न होकर कहने लगीं ।११। हे पुत्री ! तेरा पति बिन्दुग घोर पापी और वेश्यागामी था । वह महामूढ़ मरने के पश्चात् नरक में गिरा ।१२। उसने बहुत वर्षों तक नरक के दुःख भोगे और बचे हुये पाप के कारण वह विंध्याचल में जाकर पिशाच हुआ ।१३। इस समय वह अनेक क्लेशों में पड़ा हुआ पिशाच है और वायु भक्षण करता हुआ अनेक कष्टों को भोगता है ।१४।

इति गौर्य्या वचः श्रुत्वा चंचुला सा शुभव्रता ।
पतिदुःखेन महता दुःखिताऽऽसीत्तदा किल ।१५।
समाधाय ततश्चित्त सुप्रणम्य महेश्वरीम् ।
पुनः पप्रच्छ सा नारी हृदयेन विदूयता ।१६।
महेश्वरी महादेवि कृपां कुरु ममोपरि ।
समुद्धर पतिं मेऽद्य दुष्टकमकं खलम् ।१७।
केनोपायेन मे भर्ता पापात्मा स कुबुद्धिमान् ।
सद्गतिं प्राप्नुयाद्देवि तद्वदाशु नमोऽस्तु ते ।१८।
इत्याकर्ण्य वचस्तस्याः पार्वती भक्तवत्सला ।
प्रत्युवाच प्रसन्नात्मा चंचुलां स्वसखीं च ताम् ।१९।
शृणुयाद्यदि ते भर्ता पुन्यां सिवकथा पराम् ।
निस्तीर्य दुर्गतिं सर्वां सद्गतिं प्राप्नुयादिति ।२०।
इति गौर्य्यां वचः श्रुत्वाऽमृताक्षरमथादरात् ।
कृताञ्जलिर्नतस्कन्धा प्रणनाम पुनः पुनः ।२१।
तत्कथाश्रवणं भर्तुः सर्वपापविशुद्धये ।
सद्गतिप्राप्तये चैव प्रार्थयामास तां तदा ।२२।

सूतजी ने कहा—पार्वतीजी की बात सुनकर उत्तम व्रत वाली चंचुला अपने पति के दुःख से अत्यन्त दुःखी हो गई ।१५। अपने स्वामी में चित्त लगाकर पार्वतीजी को प्रणाम कर वह दुखित हृदय से उनसे पुनः प्रश्न करने लगी ।१६। हे महादेवी ! मुझ पर कृपा करिये । दुष्टकर्म के फल से कष्ट भोगते हूए मेरे स्वामी का उद्धार कीजिये ।१७। मेरा पापात्मा स्वामी किस प्रकार बुद्धिमान हो सद्गति को प्राप्त हो, मेरे प्रति वह कहिये। मैं आपको प्रणाम करती हूं ।१८। सूतजी ने कहा—उसकी बात सुनकर भक्त-वत्सल पार्वतीजी ने प्रसन्न होकर अपनी सखी चंचुला से कहा ।१९। यदि तेरा पति पवित्र शिव कथा सुने तो दुर्गति से पार होकर श्रेष्ठ गति प्राप्त करेगा ।२०। पार्वतीजी के अमृत समान शब्दों को श्रवण कर आदर पूर्वक हाथ जोड़ती हुई चंचुला अपने स्वामी के पाप की निवृत्ति के लिये शिव कथा की इच्छा करती हुई, कथा का सुयोग प्राप्त करने के निमित्त भगवती से पुनः प्रार्थना करने लगी ।२१-२२।

तयामुहुर्मुहुर्नार्या प्राथ्यमाना शिवप्रिया ।
गौरी कृपान्वितासीत्सा महेशी भक्तवत्सला ।२३।
अथ तुम्बुरमाहूय शिवसत्कीर्तिगायकम् ।
प्रीत्या गन्धवराजं हि गिरिकन्येदमब्रवीत् ।२४।
हे तुंबुरो शिवप्रीत मन मानसकारक ।
सहानया विन्ध्यशलं भद्रं ते गच्छ सत्वरम् ।२५।
आस्ते तत्र महाघोरः पिशाचोऽतिभयंकरः ।
तद्वृत शृणु सुप्रीत्याऽऽदितः सर्व ब्रवीमि ते ।२६।
पुराभवे पिशाचः स बिन्दुगाह्वोऽभवद्द्विजः ।
अस्या नार्याः पतिर्दुष्टो मत्सख्या वृषलीपतिः ।२७।
स्नानसंध्याक्रियाहीनोऽशोचः क्रोधविमूढधीः ।
दुर्भक्षो सज्जनद्वेषी दुष्परिग्रहकारकः ।२८।
हिंसकः शस्त्रधारी च सव्यहस्तेन भोजनी ।
दीनानां पीडकः क्रूरः परवेश्मप्रदीपकः ।२९।
चाण्डालाभिरतो नित्य वेश्याभोगी महाखलः ।

स्वपत्नीत्यागकृत्पापी दुष्टसंगरतस्तदा ।३०।

सूतजी ने कहा—जब उसने पार्वतीजी की बारम्बार प्रार्थना की तब भक्तवत्सला पार्वतीजी कृपा से युक्त हो गईं ।२३। उन्होंने शिव की सत्कीर्ति का गान करने वाले तुम्बरु गन्धर्व को बुलाया और उससे प्रीतिपूर्वक कहने लगीं ।२४। पार्वतीजी ने कहा—हे तुम्बरु ! तुम शिवजी की प्रीति करने वाले और मेरे वचन मानने वाले हो । इसके साथ विंध्याचल पर्वत को जाओ ।२५। वहाँ एक अत्यन्त भयङ्कर पिशाच निवास करता है । मैं तुमसे उसकी बात कहती हूँ, तुम प्रसन्न होकर उसे श्रवण करो ।२६। पिशाच योनि को प्राप्त होने से पूर्व बिन्दुग नामक ब्राह्मण था । वह दुष्ट इसी स्त्री का स्वामी था । वेश्यागामी, स्नान एवं संध्या की क्रिया से रहित, पवित्रता से हीन, क्रोध से मूर्ख बुद्धि वाला, दुर्भक्षी, सज्जनों से द्वेष रखने वाला और दुष्परिग्रह वाला था ।२७।-२८। वह शस्त्रधारी, हिंसक, बाँये हाथ से भोजन करने वाला, दोनों को पीड़ित करने वाला, क्रूर, पीड़क तथा लोगों के घर में आग लगाने वाला था ।२९। चाण्डाल से प्रीति करने वाला, वेश्यागामी, अत्यन्त पापी, पत्नी का त्याग करने वाला और दुष्ट सङ्ग से प्रीति करने वाला था ।३०।

तेन वेश्याकुसंगेन सुकृतं नाशितं महत् ।
वित्तलोभेन महषी निभया जारिणी कृता ।३१।
आमृत्योः स दुराचारी कालेन निधनं गतः ।
ययौ यमपुरं घोरंभोगस्थानं हि पापिनाम् ।३२।
तत्र भुक्त्वा स दुष्टात्मा नरकानि बहूनि च ।
इदानीं स पिशाचोऽस्ति विंध्येऽद्रौ पाप भुक्खलः ।३३।
तस्याग्रे परमां पुण्यां सर्वपापविनाशिनीम् ।
दिव्यां शिवपुराणस्य कथांकथय यत्नतः ।३४।
द्रुतं शिवपुराणस्य कथा श्रवणतः परात् ।
सर्वपाप विशुद्धात्मा हास्यति प्रेततां च सः ।३५।
मुक्तं च दुर्गतेस्तंवै बिन्दुगं त्वं पिशाचकम् ।

मदाज्ञया विमानेन समानय शिवान्तिकम् ।३६।

उसने वेश्या-सङ्ग से अपने सभी सुकृतों को नष्ट कर डाला और धन के लोभ से अपनी पत्नी को भी व्यभिचारिणी बना दिया ।३१। मरने के समय तक वह दुराचार में लगा रहा और मृत्यु होने पर यम-लोक को गया जहाँ से उसे पापियों के घोर स्थान की प्राप्ति हुई ।३२। वहाँ उस दुष्टात्मा को अनेक नरक भोगने पड़े और अब विंध्याचल पर्वत में जाकर पिशाच हो गया है ।३३। तुम वहाँ जाकर परम पवित्र शिवपुराण की कथा, जो सम्पूर्ण पापों को नष्ट करने में समर्थ है, उस पिशाच को श्रवण कराओ ।३४। वह उस पवित्र कथा सुनते ही पाप-रहित होकर अपने प्रेतत्व का त्याग कर देगा ।३५। तब वह दुर्गति से छूट कर अपने पिशाचत्व को छोड़ देगा । उस समय तुम उसे विमान पर बैठा कर मेरी आज्ञा से शिवजी के ले जाना ।३६।

इत्यादिष्टो महेशान्या गन्धर्वेन्द्रश्च तुंबुरुः ।३७।
मुमुदेऽतीव मनसि भाग्यं निजमवर्णयत् ।३८।
आरुह्य सुविमानं स सत्या तत्प्रियया सह ।
ययौ विंध्याचलं सोऽरं यत्रास्ते नारदप्रियः ।३९।
तत्रापश्यत्पिशाचं तं महाकायं महाहनुम् ।
प्रहसन्तं रुद्रन्तं च वलगतं विकटाकृतिम् ।
बलाज्जग्राह तं पाशः पिशाचं चातिभीकरम् ।
तुम्बुरुश्शिवसत्कीर्तिगायकश्च महाबली ।४०।
अथोशिवपुराणस्य वाचनार्थं स तुम्बुरुः ।
निश्चित्य रचनां चक्रे महोत्सवसमन्विताम् ।४१।
पिशाचं तारितुं देव्याः शासनात्तुम्बुरुगतः ।
विंध्यं शिवपुराणं स ह्यद्रि श्रावयितुं परम् ।४२।
इति कोलाहलो जातः सवलोकेषु वै महान् ।
तत्र तच्छ्रवणार्थाय ययुर्देवर्षयो द्रुतम् ।४३।

सूतजी ने कहा—तुम्बरु गन्धर्व से जब पार्वतीजी ने इस प्रकार कहा, तब वह अत्यन्त प्रसन्न होकर अपने भाग्य को सराहने लगा ।३७।

चंचुला को साथ लेकर वह गन्धर्व विमान में बैठा और तब उनने विंध्याचल पर्वत को प्रस्थान किया ।३८। वहाँ वह विकराल हनु वाला महाकाय पिशाच उन्हें दिखाई दिया । वह विकट आकार वाला कभी हँसता, रोता कभी कूदता और चाहे जो कुछ बकता था ।३९। तुम्बरु ने उस पिशाच को बलपूर्वक पाशों के द्वारा पकड़ा और फिर उसके समक्ष शिवजी की कीर्ति का गान प्रारम्भ किया ।४०। फिर तुम्बरु ने शिवपुराण पढ़ने के लिये एक महोत्सव के वातावरण का आयोजन किया ।४१। पार्वतीजी की आज्ञा से उस पिशाच को सङ्कट मुक्त करने लिये तुम्बरु गया, वह शिवपुराण की कथा विंध्याचल में कहेगा ।४२। सब लोगों में यह विज्ञप्ति प्रसारित हो गई तब शिवपुराण का श्रवण करने के लिये वहाँ देवता और ऋषि भी आ गये ।४३।

समाजस्तत्र परमोऽद्भुतश्चासीच्छुभावहः ।
तेषां शिवपुराणस्यागतानां श्रोतुमादरात् ।४४।
पिशाचमथ तं पाशैर्बद्ध्वा समुपवेश्य च ।
तुंबुरुर्वल्लकीहस्तो जगौ गौरीपतेः कथाम् ।४५।
आरभ्य संहितामाद्यां सप्तमीसंहितावधि ।
स्पष्टं शिवपुराणं हि समाहात्म्यं समावदत् ।४६।
श्रुत्वा शिवपुराणं तु सप्तसहितमादरात् ।
बभूवुः सुकृतार्थास्ते सर्वे श्रोतार एव हि ।४७।
स पिशाचो महापुण्यं श्रुत्वा शिवपुराणकम् ।
विधूय कलुषं सर्वं जहौ पैशाचिकं वपुः ।४८।
दिव्यरूपो वभूवाशु गौर वर्णः सितांशुकः ।
सर्वालंकारदीप्तांगस्त्रिनेत्रश्चन्द्रशेखरः ।४९।

उस समय वहाँ श्रेष्ठ और अद्भुत समाज हुआ सभी, आदरपूर्वक शिवपुराण सुनने को एकत्र हुए थे ।४४। पाशों से बँधा वह पिशाच भी वहाँ बैठा । उस समय तुम्बरु ने वीणा लेकर पार्वतीपति शिवजी का कीर्ति-गान प्रारम्भ किया ।४५। उसने प्रथम संहिता से प्रारम्भ कर सातवीं संहिता तक माहात्म्य सहित सम्पूर्ण शिवपुराण की

कथा का वर्णन किया ।४६-४७। कथा श्रवण के फल से पिशाच ने भी पाप रहित होकर अपने शरीर का त्याग कर दिया ।४८। वह तत्काल गौर वर्ण का होकर श्वेत वस्त्रधारी दिखाई देने लगा । सम्पूर्ण अलङ्कारों से जगमगाता हुआ वह तीन नेत्र युक्त चन्द्रशेखर रूप हो गया ।४६।

शिवपुराण श्रवण विधि

श्रीमच्छिवपुराणस्य श्रवणस्य विधिं वद ।
येन सर्वं लभेच्छ्रोता सम्पूर्ण फलमुत्तमम् ।१।
अथ ते संप्रवक्ष्यामि संपूर्ण धलहेतवे ।
विधि शिवपुराणस्य शौनक श्रवणे मुने ।२।
दैवज्ञं च प्रमाहूय सन्तोष्य च जनान्वितः ।
मुहूर्तं शोधयेच्छुद्धं निर्विघ्नेन समाप्तये ।३।
वार्ता प्रेष्या प्रयत्नेन देशे देशे च सा शुभा ।
भविष्यति कथा शैवी आगन्तव्यं शुभार्थिभिः ।४।
दूरे हरिकथाः केचिद्दूरे शंकरकीर्तनाः ।
स्त्रियः शूद्रादयो ये च वोधस्तेषां भवेद्यतः ।५।
देशे देशे शांभवा ये कीर्तन श्रवणोत्सुकाः ।
तेषामानयनं कार्यं तत्प्रकारार्थमादरात् ।६।
भविष्यति समाजोऽत्र साधूनां परमोत्सवः ।
पारायणे पुराणस्य शैवस्य परामाद्भुतः ।७।

शौनकजी ने कहा—हे सूतजी ! आप शिवपुराण के सुनने की विधि मेरे प्रति कहिए, जिससे श्रोताओं को श्रेष्ठ फल की प्राप्ति हो सके ।१। सूतजी ने कहा—मैं फल के लिए शिवपुराण की विधि तुमसे कहता हूं । हे शौनक ! तुम इसे ध्यान से श्रवण करो ।२। शिवपुराण की कथा सुनने के लिए ज्योतिषी को बुलावे और कुटुम्ब सहित सन्तुष्ट कर पुराण के निर्विघ्न पूर्ण होने के लिए मुहूर्त निकाले ।३। फिर देश-देश में समाचार भेजे कि अमुक स्थान पर शिवपुराण की कथा होगी, उसे सुनने के लिए सबको सम्मिलित होना चाहिये ।४। जो शिवजी की कथा अथवा उनके कीर्तन से रहित हो ऐसे स्त्री, शूद्र आदि अज्ञानियों को भी बोध हो

सके ।५। देश-देश में जो शिव-भक्त कीर्तन और श्रवण के लिये उत्क-ण्ठित हों, उनको आदरपूर्वक आमन्त्रित करना चाहिए ।६। इस स्थान पर साधुओं का परम मंगल प्रदान करने वाला समाज होगा तथा अत्यंत अद्‌भुत शिवपुराण का पारायण होगा ।७।

नावकाशो यदि प्रेम्णागन्तव्यं दिनमेककम् ।
सर्वथाऽऽगमनं कार्यं दुर्लभा च क्षणस्थितिः ।८।
तेषामाह्वानमेवं हि कार्यं सविनय मुदा ।
आगतानां च तेषां हि सर्वथा कार्य्यं आदरः ।९।
शिवालये च तीर्थे वा वने वापि गृहेऽथवा ।
कार्यं शिवपुराणस्य श्रवणस्थलमुत्तमम् ।१०।
कार्यं संशोधन भूमेर्लेपनं धातुमण्डनम् ।
विचित्रा रचना दिव्या महोत्सवपुरासरम् ।११।
कर्तव्यो मण्डपाऽत्युच्चैः कदलीस्तंभमंडितः ।
फलपुष्पादिभि सम्यग्विष्वग्वतानराजितः ।१२।
चतुर्द्दिक्षु ध्वजारोपः सपताकः सुशोभनः ।
सुभक्तिः चर्बथा कार्या सर्वानन्दविधायिनी ।१३।
सकल्प्यमानसं दिव्यं शङ्करस्य परमात्मनः ।
वक्तुश्चापि तथा दिव्यमासनं सुखसाधनम् ।१४।

यदि अवकाश न हो तो एक दिन के लिए ही प्रेम पूर्वक आइये । यहाँ अवश्य आना चाहिये। क्योंकि ऐसे कार्य क्षणमात्र के लिये भी दुर्लभ हैं ।८। इस प्रकार विनयपूर्वक लोगों को आमन्त्रित करना चाहिए और आगत व्यक्तियों का आदर एवं सम्मान करना चाहिये ।९। यदि शिवा-लय रूप तीर्थ की स्थापना कराये और वहाँ शिवपुराण की कथा करावे तो वह स्थान इसके लिए सर्वश्रेष्ठ है ।१०। जहाँ शिवपुराण की कथा हो, वहाँ पहिले पृथ्वी को लीपे और धातुओं से आच्छादित करे। इस प्रकार विचित्र रचना पूर्वक महोत्सव करे ।११। केला का ऊँचा मण्डप निर्मित करे और फल पुष्पादि का अर्पण करते हुये भले प्रकार पूजन करना चाहिये ।१२। चारों ओर ध्वजा पताका फहराये और सब

प्रकार से आनन्द प्रदान करने वाली श्रेष्ठ भक्ति का आश्रय ग्रहण करे ।१३। संकल्प कर भगवान् शङ्कर को दिव्य आसन पर प्रतिष्ठापित करे और भक्त को बैठने के लिये भी श्रेष्ठ आसन दे।१४।

श्रोतृणां कल्पनीयानि सुस्थलानि ययार्हतः ।
अन्येषां च स्थलान्येव साधारणतया मुने ।१५।
विवाहे यादृश चित्त तादृशं कार्यमेव हि ।
अन्य चिन्ता विनिर्वार्य्या सर्वा शौनक लौकिकी ।१६।
उदङ्मुखो भवेद्वक्ता श्रोता प्राग्वदनस्थता ।
व्युत्क्रमः पादयोर्ज्ञेयो विरोधो नास्ति कश्चन ।१७।
अथवा पूर्वदिग्ज्ञेया पूज्यपूजकमध्यतः ।
अथवा सम्मुखं वक्तुः श्रोतृणामाननं स्मृतम् ।१८।
नीचबुद्धि न कुर्वीत पुराणज्ञे कदाचन ।
यस्य वक्त्रोद्गता वाणी कामधेनुः शरीरिणाम् ।१९।
गुरुवत्सन्ति बहवो जन्मतो गुणतश्च वै ।
परो गुरु पुराणज्ञस्तेषां मध्ये विशेषतः ।२०।
पुराणज्ञः शुचिर्दक्षः शान्तो विजितमत्सरः ।
साधुः कारुण्यवान्वाग्मी वदेत्पुण्यकथामिमाम् ।२१।
आसूर्योदयमारभ्य सार्द्धद्विप्रहरान्तकाम् ।
कथा शिवपुराणस्य वाच्यसम्मक् सुधीमता ।२२।

श्रोताओं के बैठने के लिये भी योग्य एवं सुन्दर स्थान रखे तथा सभी स्थान साधारण रूप से निश्चित करे।१५। शिवपुराण की कथा में वैसा ही उत्साह रखे, जैसा विवाहादि अन्य मङ्गल कार्यों के करने में होता है। हे शौनक ! सभी लौकिक चिन्ताओं को उस समय त्याग दे ।१६। वक्ता का मुख उत्तर दिशा में रहे और श्रोता पूर्वाभिमुख होकर पालथी मारकर बैठे। कथा के सम्मुख पाँव न रखे और किसी प्रकार का भी बिरोध न हो ।१७। अथवा पूज्य पूजक के बीच में पूर्व दिशा होनों चाहिये अथवा श्रोताओं के मुख कथा वाचक के सम्मुख होने चाहिये। ।१८। पुराण के जानने वाले के प्रति शंका युक्त बुद्धि न करे, क्योंकि

उसके मुख के निकलने वाले वचन देहधारियों के लिये कामधेनु के समान हैं ।१६। जन्म से और गुण से अनेक गुरु होते हैं, परन्तु उन सभी में शिवपुराण का ज्ञाता विशिष्ट प्रकार का गुरु होता है ।२०। पुराण का जानने वाला पवित्र, चतुर, शान्त, मन्द-रहित, साधु दयावान और वाग्मी हो जो इस पुराण कथा को कहता है।२१। शिवपुराण की कथा का आरम्भ सूर्योदय से पूर्व कर दे और बुद्धिमान कथावाचक उसे साढ़े दो पहर तक बाँचे ।२२।

कथां शिवपुराणस्य शृणुयाददरात्सुधीः ।
श्रोता सुविधिना शुद्धः शुद्धचित्तः प्रसन्नधीः ।२३।
अनेककर्मविभ्रान्तः कामादिषड्विकारवान् ।
स्त्रैणः पाखण्डवादी च वक्ता श्रोता न पुण्यभाक् ।२४।
लोकचिन्तां धनागारपुत्रचिंतां व्युदस्य च ।
कथाचित्तः शुद्धमतिः स लभेष्फलमुत्तमम् ।२५।
श्रद्धाभक्तिसमायुक्ता नान्यकार्येषु लालसः ।
वाग्यताः शुचयोऽव्यग्राः श्रोतारः पुण्यभागिनः ।२६।
कथायां कथ्यमानायां गच्छन्त्यंयत्र ये नराः ।
भोगान्तरे प्रणश्यन्ति तेषां दारादिसम्पदः ।२७।
असम्प्रणम्य वक्तारं कथां शृण्वन्ति ये नराः ।
भुक्त्वा ते नरकान्सर्वान्भवत्यर्जुनपादपाः ।२८।
अनातुरा श्याना ये शृण्वतीमां कथां नराः ।
भुक्त्वा ते नरकान्सर्वान्भवत्यजगरादयः ।२९।

शिवपुराण की कथा बुद्धिमान श्रोता आदर पूर्वक सुने और शुद्ध तथा प्रसन्नचित्त रहे ।२३। अनेक कर्मों से भ्रान्ति को प्राप्त तथा कामादि छै विकारों से युक्त, चोर, पाखण्डी वक्ता या श्रोता पुण्य के भागी नहीं होते ।२४। उत्तम फल की प्राप्ति उसी को होती है जो लोक-चिन्ता, धन, गृह, या पुत्र की चिन्ता त्याग कर केवल शिव कथा में चित्त लगाता है ।२५। श्रद्धा भक्ति से युक्त तथा अन्य कार्यों की लालसा से मुक्त पुरुष मौन रहकर और व्यग्रता को छोड़कर कथा सुनते हैं, वही पुण्य-

भागी होते हैं ।२६। कथा होते हुये जो मनुष्य उसे बीच में छोड़कर अन्य स्थान को चले जाते हैं, उनके भोगान्तर में स्त्री, धन आदि का नाश हो जाता है ।२७। जो मनुष्य कथा वाचक को प्रणाम किये बिना कथा श्रवण करते हैं, वे नरक में दुःख पाकर अर्जुन वृक्ष की योनि प्राप्त करते हैं ।२८। जो मनुष्य निरोग होते हुये भी लेटकर कथा श्रवण करते हैं, वे नरकों के दुःख भोगने के पश्चात् अजगर आदि होते हैं ।२९।

वक्तुः समासनारूढ़ा ये श्रृण्वन्ति कथामिमाम् ।
गुरुतल्पसमं पाप प्राप्यते नारकैः सदा ।३०।
ये निंदंति च वक्तारं कथां चेमां सुपावनीम् ।
भवंति शनका भुक्त्वा दुःखं जन्मशतं हि ते ।३१।
कथायां वर्तमानायां दुर्वादं ये वदंति हि ।
भुक्त्वा ते नरकान्घोरान्भवंति गर्दभास्ततः ।३२।
कदाचिन्नापि श्रृण्वन्ति कथामेतां सुपावनीम् ।
भुक्त्वा ते नरकान्घोरान्भवंति वनसूकराः ।३३।
कथायां कीत्यमानायां विघ्नं कुर्वन्ति ये खलाः ।
कोटचब्दं नरकाम्भुक्त्वा भवंति ग्रामसूकराः ।३४।
एवंविचार्य शृद्धात्मा श्रोता वक्तृसुभक्तिमान् ।
कथाश्रवणहेतोर्हि भवेत्प्रीत्योद्यतः सुधीः ।३५।
कथाविघ्नविनाशार्थं गणेशं पूजयेत्पुरा ।
नित्य संपाद्य सं ्ेपात्प्रायश्चित्तं सपाचरेत् ।३६।

जो किसी अहं-भावना वश वक्ता के बराबर, ऊंचे आसन पर बैठ कर कथा श्रवण करते हैं, उनको गुरु शैय्या पर चढ़ने का पाप होता है ।३०। जो वक्ता इस पवित्र कथा की निन्दा करते हैं, वे दुःख भोगते हुये सौ जन्म तक श्वान योनि को प्राप्त होते हैं ।३१। जो कथा होते के समय मुख से दुर्वचन निकालते हैं, वे घोर नरक के दुखों को भोगकर गधे की योनि में जाते हैं ।३२। इस पवित्र कथा को जो कभी भी श्रवण नहीं करते, वे घोर नरक में जाकर दुःख भोगते और फिर वन शूकर होते हैं ।३३। कथा होते समय जो दुष्ट मनुष्य विघ्न उपस्थित करते हैं, वह

करोड़ वर्षों तक नरक भोगने के उपरान्त ग्राम शूकर बनते हैं ।३४। इसलिये श्रोता और वक्ता दोनों ही विचार पूर्वक शुद्धात्मा होकर भक्ति-भाव सहित कथा सुनने के लिये बुद्धिपूर्वक तत्पर हों ।३५। कथा में विघ्न उपस्थित न हो, इसके लिये प्रथम गणेशजी का पूजन करे, फिर संक्षेप में नित्य कर्म करके प्रायश्चित करे ।३६।

नवग्रहांश्च सम्पूज्य सर्वतोभद्रदैवतम् ।
शिवपूजोक्तविधिना पुस्तकं तत्समर्चयेत् ।३७।
पूजनांते महाभक्त्या करौ बद्ध्वा विनीतकः ।
साक्षाच्छिवस्वरूपस्य पुस्तकस्य स्तुतिं चरेत् ।३८।
श्रीमच्छिवपुराणाख्य प्रत्यक्षस्त्व महेश्वरः ।
श्रवणार्थं स्वीकृतोऽसि सन्तुष्टो भव वै मयि ।३९।
मरोरथ मदीयोऽयं कर्तव्यः सफलस्त्वया ।
निर्विघ्नेन सुसम्पूर्णं कथाश्रवणमस्तु मे ।४०।
भवाब्धिमग्नं दीनं मां समुद्धर भवार्णवात् ।
कर्मग्राहगृहीतांगं दासोऽहं तव शंकर ।४१।
एवं शिवपुराणं हि साक्षाच्छिवस्वरूपकम् ।
स्तुत्वा दीनवचः प्रोच्य वक्तुः पूजां समारभेत् ।४२।
शिवपूजोक्तविधिना वक्तारं च समर्चयेत् ।
सपुष्पवस्त्रभूषाभिर्धूपदीपादिनाऽर्चयेत् ।४३।
तदग्रे शुद्धचित्तेन कर्तव्यो नियमस्यदा ।
आसमाप्ति यथाशक्त्या धारणीयः सुयत्नतः ।४४।
व्यासरूप प्रबोधाग्य् शिवशास्त्रविशारद ।
एतत्कथाप्रकाशेन मदज्ञानं विनाशय ।४५।

नवग्रह और सर्वतोभद्र के देवताओं को पूजकर शिवजी की पूजन विधि के अनुसार पुराण-पुस्तक का पूजन करना चाहिये ।३७। पूजन के अन्त में भक्ति पूर्वक दोनों हाथ जोड़कर साक्षात् शिवजी स्वरूप पुराण-पुस्तक की स्तुति करे ।३८। यह श्री शिवपुराण प्रत्यक्ष शिवजी का स्वरूप है । सुनने के लिये यह सत्कार करने से मेरे ऊपर प्रसन्न हों

।३९। मेरे इन मनोरथों को आप पूर्ण कीजिये । मेरी यह कथा निर्विघ्न सम्पूर्ण हो जाय, ऐसी कृपा करिये ।४०। हे शङ्कर ! मैं आपका दास हूं । कर्म रूपी ग्राह के द्वारा पकड़ा हुआ संसार सागर में पड़ा हूँ । इस सागर से आप मुझे पार लगाइये ।४१। इस प्रकार इस साक्षात् शिव स्वरूप शिवपुराण का स्तवन करता हुआ नम्रतायुक्त वाणी से व्यास पूजन करे ।४२। शिवजी का पूजन जिस विधि से किया जाता है, उसी विधि से वक्ता का पूजन करे । वस्त्राभूषण, पुष्प और धूप दीप से पूजन करे ।४३। उसके सम्मुख शुद्ध चित से नियम ले और जब तक कथा सम्पूर्ण हो तब तक अपने सामर्थ्यानुसार नियमों का पालन करे ।४४। हे व्यास स्वरूप ! हे ज्ञान के देने वाले ! हे सम्पूर्ण शास्त्र विशारद ! आप इस कथा को कहकर मेरे अज्ञान का हरण कीजिये ।४५।

शिवपुराण के श्रोताओं के विधि निषेध और पूजाविधि

पुंसां शिवपुराणस्य श्रवणव्रतिनां मुने ।
सर्वलोकहितार्थाय दयया नियमं वद ।१।
नियमं श्रृणु सद्भक्त्या पुसां तेषां च शौनक ।
नियमात्सत्कथां श्रुत्वा निर्विघ्नफलमुत्तमम् ।२।
पुसां दीक्षाविहीनानां नाधिकारः कथाश्रवे ।
श्रोतुकामैरतो वक्तुर्दीक्षा ग्राह्या च तैर्मुने ।३।
ब्रह्मचर्यमधः सुप्ति पत्रावल्यां च भोजनम् ।
कथासमाप्तौ भुक्ति च कुर्यान्नित्यं कथाव्रती ।४।
आसमाप्तपुराणं हि समुपोष्य सुशक्तिमान् ।
शृणुयाद्भक्तिः शुद्धः पुराणं शैवमुत्तमम् ।५।
घृतपानं पयःपानं कृत्वा वा शृणुयात्सुखम् ।
फलाहारेण वा श्राव्यमेकभुक्तं न वाहितत् ।६।
एकवारं हविष्यान्न भुंज्यादेतत्कथाव्रती ।
सुखसाध्यं यथा स्यात्तच्छ्रवणं कायमेव च ।७।

शौनकजी ने कहा—हे सूतजी ! शिवपुराण का व्रत करने वालों के सम्पूर्ण लोकहित के लिये नियम कहिये ।१। सूतजी ने कहा–हे शौनक ! भक्तिपूर्वक उनके नियमों को सुनो । नियम से सत्कथा को सुने, जिससे निर्विघ्नता पूर्वक श्रेष्ठ फल प्राप्त हो ।२। कथा सुनने में दीक्षा-रहित का अधिकार नहीं है । इसलिये वक्ता से दीक्षा लेनी चाहिए ।३। ब्रह्मचर्य पूर्वक पृथिवी में शयन, पत्तल में भोजन तथा कथा समाप्त होने पर आहार ग्रहण करे ।४। श्रोता को उचित है कि पुराण-कथा के सम्पूर्ण होने पर्यन्त सामर्थ्यानुसार व्रत पालन करते हुए श्रद्धा सहित शिवपुराण का श्रवण करे ।५। घृत या दुग्ध का पान करके या फलाहार करके अथवा एक समय भोजन करके कथा सुने ।६। इस कथा के सुनने वाले को एक बार हविष्यान्न का भोजन करना चाहिये जिस प्रकार कथा श्रवण सुखसाध्य हो सके वैसा ही करे ।७।

भोजनं सुकरं मन्ये कथासु श्रवणप्रदम् ।
नोपवासो वरश्चेत्स्यात्कथाश्रवणविघ्नकृत् ।८।
गरिष्ठं द्विदलं दग्धं निष्पावांश्च मसूरिकाम् ।
भावदुष्टं पर्युषितं जग्ध्वा नित्यं कथाव्रती ।९।
वार्ताकं च कलिंदं च चिचण्डं मूलकं तथा ।
कूष्माण्डं नालिकेरं च मूलं जग्ध्वा कथाव्रती ।१०।
पलाण्डुं लशुनं हिंगुं गृजनं मादकं हि तत् ।
वस्तुन्यामिषसंज्ञानि वर्जयेद्यः कथाव्रती ।११।
कामादिषड्विकारं च द्विजनां च विनिन्दनम् ।
पतिव्रतासतां निन्दां वर्जयेद्यः कथाव्रती ।१२।
सत्यं शौचं दयां मौनमार्जव विनय तथा ।
औदार्यं मनसश्चैव कुर्यान्नित्यं कथाव्रती ।१३।
निष्कामश्च सकामश्च नियमाच्छृणुयात्कथाम् ।
सकामः काममाप्नोति निष्कामो मोक्षमाप्नुयात् ।१४।

भले प्रकार कथा में मन लग सके, इसलिये थोड़ा बहुत भोजन अवश्य कर ले । उपवास करने से कथा में मन न लगने के कारण विघ्न होता

है ।८। गरिष्ठ दालें, दग्ध निष्पाव मसूरिका अथवा बासी और दोषयुक्त भोजन को कथाव्रती ग्रहण न करे ।९। बैंगन, कलिंद चिचैंड़ा मूली, पेठा आदि शाक मूल का सेवन भी कथाव्रती को नित्य प्रति नहीं करना चाहिए ।१०। प्याज, लहसुन, गाजर तथा मादक द्रव्य और आमिष वस्तुओं का भोजन भी कथाव्रती के लिए त्याज्य कहा गया है ।११। कामादि षट् विकारों का त्याग करे । सत्पुरुषों और ब्राह्मणों की कभी निन्दा न करे तथा पतिव्रता की भी निन्दा न करे ।१२। सत्य, शौच, दया, मौन, आर्जव, विनय, उदारता आदि का पालन कथाव्रती पुरुष को नित्य प्रति करना चाहिए ।१३। निष्काम या सकाम किसी भी भाव से कथा नियमपूर्वक सुननी चाहिए । सकाम पुरुष कामना को और निष्काम श्रवण वाला पुरुष मोक्ष को प्राप्त होता है ।१४।

दरिद्रश्च क्षयी रोगी पापी निर्भाग्य एव च ।
अनपत्योऽपि पुरुषः श्रृणुयात्सत्कथामिमाम् ।१५।
काकवन्ध्यादयः सप्तविधा अपि खलस्त्रियः ।
स्रवद्गर्भा च या नारी ताभ्यां श्राव्या कथा परा ।१६।
शिवपूजनवत्सम्यक्पुस्तकस्य पुरो मुने ।
पूजा कार्या सुविधिना वक्तुश्च तदनन्तरम् ।१७।
पुस्तकाच्छादनार्थं हि नवीनं चासनं शुभम् ।
समर्चयेद्दृढं दिव्यं बन्धनार्थं च सूत्रकम् ।१८।
पुराणार्थं प्रयच्छन्ति ये सूत्रं वसनं नवम् ।
योगिनो ज्ञानसम्पन्नास्ते भवंति भवे भवे ।१९।
स्वर्गलोकं समासाद्य भुक्त्वा भोगान्यथेप्सितान् ।
स्थित्वा ब्रह्मपदे कल्पं यान्ति शैवपदं ततः ।२०।

दरिद्री, क्षयी, रोग, पापी, भाग्यहीन एवं सन्तानहीन पुरुष भी अपने दुःखों के निवारणार्थ इस कथा को श्रवण करे।१५। सातों प्रकार की बंध्या स्त्रियों अथवा जिन स्त्रीयों का गर्भ-स्राव हो जाता हो उन्हें निरन्तर शिव कथा को श्रवण करना चाहिए ।१६। हे मुने ! शिवजी

का पूजन करने के समान पुस्तक के सम्मुख विधिवत् पूजन करे और फिर वक्ता का पूजन करे ।१७। पुस्तक के आच्छादनार्थ नवीन वस्त्र प्रदान करे और उसे बाँधने के निमित्त सुन्दर रेशमी डोरा देना चाहिए, ।१८। जो पुरुष पुराण के निमित्त नवीन वस्त्र और सूत्र प्रदान करते हैं, वे सभी युगों में योगी और ज्ञान-सम्पन्न होते हैं ।१९। वे स्वर्ग लोक में जाकर वहाँ के अनेक भोगों का उपभोग कर ब्रह्मलोक को प्राप्त होते और कल्प के अन्त में शिवलोक में जाते हैं ।२०।

विरक्तश्च भवेच्छ्रोता परऽह्नि विशेशतः ।
गीता वाच्या शिवेनोक्ता रामचन्द्राय या मुने ।२१।
गृहस्थश्चेद्भवेच्छ्रोता कर्तव्यस्तेन धीमता ।
होमः शुद्धेन हविषा कर्मणस्तस्य शान्तये ।२२।
रुद्रसहितया होमः प्रतिश्लोकेन वा मुने ।
गायत्र्यास्तन्मयत्वाच्च पुराणस्यास्य तत्वतः ।२३।
दोषयोः प्रशमार्थं च न्यूनताधिकताख्ययोः ।
पठेच्च श्रृणुयाद्भक्तत्या शिवनामसहस्रकम् ।२४।
एवं कृते विधाने च श्रीमच्छिवपुराणकम् ।
संपूर्णफलदं स्याद्वै भुक्तिमुक्ति प्रदायकम् ।२५।

यदि श्रोता विरक्त हो तो द्वितीय दिवस शिव गीता का विशेष करके पाठ करे । उसका उपदेश शिवजी ने श्रीरामचन्द्रजी को दिया था ।२१। यदि श्रोता गृहस्थ हो तो उसे शुद्ध हवि के द्वारा उस कर्म की शान्ति के निमित्त हवन करना चाहिये ।२२। अथवा रुद्र संहिता के प्रत्येक श्लोक से हवन करे या तन्मय गायत्री से अथवा पुराण के तत्व से हवन करे ।२३। न्यूनाधिक दोषों की शान्ति के लिये भक्तिपूर्वक शिव-सहस्र नाम का पाठ करना चाहिये ।२४। इस प्रकार विधानपूर्वक श्रवण करने से शिवपुराण पूर्ण फलदाता होता है तथा भुक्ति और मुक्ति दोनों फलों की प्राप्ति होती है ।२५।